SHRI KETHAVATH SOMLAL

Shri Kethavath Somlal belongs to the Schedule Tribe Lambadi community. He is known for his contribution to the preservation and promotion of Banjara culture and language.

2. Born on 8th August, 1959 into a poor family in Akuthota Bavi Thanda, a hamlet in the Yadadri Bhongir district of Telangana State, Shri Somlal pursued his education at Osmania University, Hyderabad, obtaining qualifications including MA, M.Phil, B.Ed, and LLB. Following his education, he began his professional career at the State Bank of India, serving until he opted for Voluntary Retirement Scheme (VRS) in 2013, holding the position of Deputy Manager.

3. Shri Somlal has been deeply involved in collecting and promoting folk songs from Tandas. He has compiled albums, performed on stages, and featured on All India Radio and Doordarshan to raise social awareness and motivate people in the fields of education and social reform. In 1986, he authored and published the drama "Tholi Velugu." The following year, in 1987, he contributed to Andhra Bhoomi daily newspaper, writing the history of the Banjara community titled "Coolie lu Palerlu ga marina okappati Raja Putra Lambadilu." He dedicated significant efforts to preserving and promoting the cultural heritage of the Banjara (Lambadi) community. He has written and recorded devotional songs depicting the lives of Sant Sri Sevalal Maharaj, Hathiram Bavoji, Merama Mai, Tulja Bhavani, Venkateswara Swamy, and Anjaneya Swamy.

4. Shri Somlal's life epitomizes dedication to the development and preservation of Banjara (Lambadi) language and culture. His devotion to his community, fueled by strong determination, led him to undertake the translation of 701 slokas of the Bhagavad Gita into the Lambadi language in the year 1990. He submitted the manuscript for free publication to his Banjara people at the esteemed Tirumala Tirupati Devasthanam (TTD) press and after 23 years of persistent efforts, the Tirumala Tirupati Devasthanam (TTD) press published the Banjara Bhagavad Gita in 2014. This historic publication was released by Supreme Court Chief Justice H.L. Dattu and Justice N.V. Ramana during the Tirumala Sri Vari Brahmotsavam. To prevent the extinction of the Banjara language, Shri Somlal authored the Banjara Telugu Padakosham, which was published by the Telangana Government's Department of Tribal Welfare in 2021.

5. Shri Somlal was recognized for his contributions to art and culture. In 2006, he was honoured with the Swarna Kankanam (Gold Bracelet) for his inspirational songs and social service. He received the "Uttama Kalakar" (Best Artist) award from the Telangana Chief Minister on Telangana Formation Day in 2017. He was awarded the "Banjara Janapada Brahma" in 2001 by the All India Banjara Seva Sangh, the "Banjara Kala Ratna" in 2013 by the Heera Bai Banjara Memorial Trust, the "Best Folk Artist" award by the Department of Language and Culture, Government of Telangana in 2017, and the "Banjara Ratna" by the Swamy Naik Memorial Society in 2020.

श्री केतावत सोमलाल

श्री केतावत सोमलाल अनुसूचित जनजाति लंबाडी समुदाय से हैं। उन्हें बंजारा संस्कृति और भाषा के संरक्षण और प्रचार–प्रसार में उनके योगदान के लिए जाना जाता है।

2. 8 अगस्त, 1959 को तेलंगाना राज्य के यदाद्री भोंगिर जिले के एक छोटे से गांव अकुथोटा बावी थांडा में एक गरीब परिवार में जन्मे, श्री सोमलाल ने उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद से एम ए, एम.फिल, बीएड, और एलएलबी की डिग्री प्राप्त की। शिक्षा हासिल करने के बाद, उन्होंने भारतीय स्टेट बैंक में अपना पेशेवर करियर शुरू किया और 2013 में उप प्रबंधक के पद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली।

3. श्री सोमलाल तांडस के लोकगीतों के संग्रह और प्रचार–प्रसार में गहराई से शामिल रहे हैं। उन्होंने सामाजिक जागरूकता बढ़ाने और शिक्षा और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में लोगों को प्रेरित करने के लिए एल्बम संकलित किए हैं, मंचों पर प्रदर्शन किया है और ऑल इंडिया रेडियो और दूरदर्शन पर प्रस्तुति दी है। 1986 में, उन्होंने "थोली वेलुगु" नाटक लिखा और प्रकाशित किया। अगले वर्ष, 1987 में, उन्होंने आंध्र भूमि दैनिक समाचार पत्र में योगदान दिया, जिसमें उन्होंने "कुली लू पलेरलू गा मरीना ओकापति राजा पुत्र लंबाडीलु" शीर्षक से बंजारा समुदाय का इतिहास लिखा। उन्होंने बंजारा (लंबाडी) समुदाय की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और प्रोत्साहन के लिए उल्लेखनीय प्रयास किए। उन्होंने संत श्री सेवालाल महाराज, हाथीराम बावोजी, मेरामा माई, तुलजा भवानी, वेंकटेश्वर स्वामी और अंजनेय स्वामी के जीवन को दर्शाने वाले भक्ति गीत लिखे और रिकॉर्ड किए हैं।

4. श्री सोमलाल का जीवन बंजारा (लंबाडी) भाषा और संस्कृति के विकास और संरक्षण के प्रति समर्पण का प्रतीक है। अपने समुदाय के प्रति उनकी निष्ठा और दृढ़ संकल्प से वह वर्ष 1990 में भगवद् गीता के 701 श्लोकों का लम्बाडी भाषा में अनुवाद करने के लिए प्रेरित हुए। उन्होंने निःशुल्क प्रकाशन के लिए अपने बंजारा लोगों पर पांडुलिपि प्रतिष्ठित तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम प्रेस को मुफ्त प्रकाशन के लिए भेंट की और 23 वर्षों के अनवरत प्रयासों के बाद, तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम प्रेस ने 2014 में बंजारा भगवद् गीता प्रकाशित की। यह ऐतिहासिक प्रकाशन तिरुमाला श्री वारी ब्रह्मोत्सवम के दौरान उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश एच.एल. दत्तू और न्यायमूर्ति एन.वी. रमन्ना द्वारा लोकार्पित किया गया था। बंजारा भाषा को विलुप्त होने से रोकने के लिए, श्री सोमलाल ने बंजारा तेलुगु पदकोशम लिखा, जिसे 2021 में तेलंगाना सरकार के जनजातीय कल्याण विभाग द्वारा प्रकाशित किया गया था।

5. श्री सोमलाल को कला और संस्कृति में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। 2006 में, उनके प्रेरणादायक गीतों और सामाजिक सेवा के लिए उन्हें स्वर्ण कंकनम (सोने का कंगन) से सम्मानित किया गया था। उन्हें 2017 में तेलंगाना स्थापना दिवस पर तेलंगाना के मुख्यमंत्री द्वारा "उत्तम कलाकार" (सर्वश्रेष्ठ कलाकार) पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्हें 2001 में अखिल भारतीय बंजारा सेवा संघ द्वारा "बंजारा जनपद ब्रह्मा", 2013 में हीरा बाई बंजारा मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा "बंजारा कला रत्न", 2017 में भाषा और संस्कृति विभाग, तेलंगाना सरकार द्वारा "सर्वश्रेष्ठ लोक कलाकार" पुरस्कार, और 2020 में स्वामी नाइक मेमोरियल सोसाइटी द्वारा "बंजारा रत्न" पुरस्कार से सम्मानित किया गया।